# पाठ – हरिद्वार

## पाठ सार

यह पाठ भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा गया यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें उन्होंने 1871 में की गई हरिद्वार यात्रा का वर्णन किया है। यह यात्रा उनके लिए केवल तीर्थयात्रा नहीं थी, बल्कि एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव भी थी।
लेखक बताते हैं कि हरिद्वार पहुँचते ही उनका मन प्रसन्न और निर्मल हो गया। उन्होंने इसे "पुण्य भूमि" कहा, जहाँ पहुँचने मात्र से मन शुद्ध हो जाता है। चारों ओर हरे-भरे पर्वत, लताएँ और बड़े पेड़ देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे प्रकृति तपस्या कर रही हो। वर्षा से हरियाली फैल गई थी, जो तीर्थयात्रियों के लिए हरे गलीचे जैसी लग रही थी।
गंगा नदी का वर्णन पाठ का मुख्य आकर्षण है। लेखक गंगा को त्रिभुवन पावनी कहते हैं। गंगा का जल ठंडा, मीठा और स्वच्छ है, और उसकी तेज धारा का स्वर भी सुनाई देता है। नीलधारा और श्री गंगा के बीच एक नीचा पहाड़ और चण्डिका देवी का मंदिर भी है।
हरि की पैड़ी नामक घाट पर लोग स्नान करते हैं। यहाँ गंगा माता की पूजा प्रमुख है और वातावरण में आडंबर नहीं है। साधु-संत और दुकानदार संतोषी हैं, थोड़े से दान पर प्रसन्न हो जाते हैं।
हरिद्वार के पाँच प्रमुख तीर्थ स्थल हैं—हरिद्वार, कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्व पर्वत और कनखल। कनखल का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि यहाँ राजा दक्ष का यज्ञ हुआ था और सती ने प्राण त्यागे थे।
लेखक ने दीवान कृपा राम के घर में ठहरकर ठंडी हवा और शांत वातावरण का आनंद लिया। ग्रहण के समय गंगा स्नान और भागवत पाठ से उन्हें आध्यात्मिक आनंद मिला। गंगा तट पर पत्थर पर बैठकर रसोई बनाकर भोजन करना उन्हें सबसे सुंदर अनुभव लगा।
हरिद्वार का वातावरण शांत, दिव्य और सरल है। लेखक ने यहाँ की विशेष वस्तुओं का भी उल्लेख किया है, जैसे महीन जनेऊ, खुशबू वाली कुशा और सुगंधित घास। लेखक का मन आज भी हरिद्वार में बसा हुआ है और वे इसकी पवित्रता पाठकों तक पहुँचाना चाहते हैं।
**निष्कर्ष:** यह पाठ हरिद्वार की आध्यात्मिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक छवि को सरल और जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

**शब्दार्थ -**

| | | |
|---|---|---|
| **पुण्य भूमि** | - | पवित्र स्थान, धार्मिक स्थल |
| **वल्ली** | - | बेलें, लताएँ |
| **शुभ मनोरथ** | - | अच्छी इच्छाएँ |
| **तपस्या** | - | ध्यान या साधना |
| **घाम** | - | धूप |
| **अहा!** | - | आश्चर्य और प्रशंसा का भाव |
| **जन्म धन्य हैं** | - | उनका जन्म पवित्र या सार्थक है |
| **अर्थी** | - | मृत शरीर |
| **विमुख** | - | चीज में रुचि न रखना, विरक्त |
| **छाल** | - | वृक्ष की बाहरी परत |
| **मनोर्थ** | - | मन की इच्छाएँ |

| | | |
|---|---|---|
| **दुष्ट बधिक** | - | क्रूर शिकारी |
| **कल्लोल करना** | - | प्रसन्नता से चहचहाना या उछलना |
| **हरियाली** | - | हरे रंग की प्रकृति, पेड़-पौधे |
| **गलीचा** | - | कालीन |
| **जात्रियों** | - | तीर्थयात्रियों |
| **बिछायत** | - | बिछी हुई चीज़ |
| **त्रिभुवन पावनी** | - | तीनों लोकों को पवित्र करने वाली (गंगा) |
| **कीर्ति** | - | यश |
| **मिष्ट** | - | मीठा |
| **पना** | - | मीठा शरबत |
| **जल-जंतु** | - | जल में रहने वाले जीव |
| **वेग** | - | प्रवाह |
| **कन** | - | किसी चीज का बहुत छोटा अंश या टुकड़ा |
| **संचार** | - | फैलना |
| **चुटीला पर्वत** | - | एक नुकीली और ऊँची चोटी वाली पहाड़ी |
| **शिषर** | - | शिखर |
| **हरि की पैड़ी** | - | गंगा नदी का एक प्रसिद्ध पक्का घाट जहाँ स्नान किया जाता है |
| **वैरागी** | - | विरक्त, त्याग करने वाला व्यक्ति |
| **मठ** | - | साधु संन्यासियों के रहने का स्थान। |
| **पाट** | - | यहाँ पाट का अर्थ है नदी की चौड़ाई या बहाव का फैलाव |
| **धर्मशाला** | - | यात्रियों के ठहरने के लिए बनाए गए विश्राम स्थल |
| **निर्मल तीर्थ** | - | एक ऐसा तीर्थस्थान जो शुद्ध और शांतिपूर्ण हो |
| **इच्छा क्रोध की खानि** | - | ऐसे लोग जिनके मन में बहुत लालच और गुस्सा भरा हो |
| **पंडे** | - | तीर्थ यात्रियों के लिए धार्मिक अनुष्ठान कराने वाले ब्राह्मण |
| **कनखल** | - | हरिद्वार के पास स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान |
| **ज्वालापुर** | - | हरिद्वार के पास एक और क्षेत्र या कस्बा |
| **विलक्षण** | - | असाधारण, अलग तरह के |
| **संतोषी** | - | कम में खुश रहने वाले |
| **कुशावर्त्त** | - | हरिद्वार के पास स्थित एक छोटा तीर्थ कुंड |
| **नीलधारा** | - | गंगा नदी की धारा का नाम |
| **विल्वपर्वत** | - | बिल्व वृक्षों से युक्त एक सुंदर पहाड़ी |
| **विल्वेश्वर महादेव** | - | भगवान शिव का एक रूप, जो विल्वपर्वत पर विराजमान हैं |
| **दक्ष** | - | सती के पिता, जिन्होंने शिव का अपमान किया था |
| **सती** | - | भगवान शिव की पत्नी जिन्होंने अपमान सह न सकने पर आत्मदाह किया था |

| | | |
|---|---|---|
| **भस्म कर दिया** | - | जला देना |
| **धनिक** | - | धनवान व्यक्ति |
| **बखेड़ा** | - | झंझट, कठिनाई |
| **निर्मल** | - | शुद्ध, साफ, पवित्र |
| **साधु** | - | तपस्वी, संन्यासी, धार्मिक जीवन जीने वाला व्यक्ति |
| **सेवन योग्य** | - | उपयोग के लिए |
| **चित्त** | - | मन, हृदय |
| **वर्णन के बाहर** | - | जिसको शब्दों में व्यक्त न किया जा सके |
| **बंगला** | - | कोठी, मकान |
| **ग्रहण** | - | सूर्य या चंद्र ग्रहण |
| **पारायण** | - | धार्मिक ग्रंथ का निरंतर पाठ |
| **परमानंदी** | - | अत्यंत आनंदित, बहुत खुश |
| **निदान** | - | अंत में, परिणामस्वरूप |
| **छलके** | - | पानी का थोड़ा-थोड़ा गिरना |
| **चित्त** | - | मन, हृदय |
| **बारंबार** | - | बार-बार, अनेक बार |
| **वैराग्य** | - | संसार से उदासीनता, मोह रहित स्थिति |
| **भक्ति** | - | ईश्वर के प्रति प्रेम और श्रद्धा |
| **उदय** | - | प्रकट होना |
| **जनेऊ** | - | यज्ञोपवीत (हिंदू धर्म में पहनने वाला पवित्र सूत की डोरी) |
| **उज्ज्वल** | - | चमकदार, स्वच्छ, शुद्ध |
| **कुशा** | - | एक प्रकार की पवित्र घास जो धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होती है |
| **विलक्षण** | - | विशेष, असाधारण, अद्वितीय |
| **दालचीनी, जावित्री** | - | सुगंधित मसाले |
| **पुण्यभूमि** | - | पवित्र भूमि, धार्मिक महत्त्व वाली जगह |
| **साक्षात** | - | प्रत्यक्ष रूप से |
| **विरागमय** | - | वैराग्य से भरी हुई |
| **वृत्तांत** | - | विवरण, घटनाओं का लेखा-जोखा |
| **मौनावलंबन** | - | मौन धारण करना, चुप हो जाना |
| **स्थानदान** | - | स्थान देना, प्रकाशित करना |

egyanarchive

## पाठ से

### मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1."सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं" का क्या अर्थ है?
(क) लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वादिष्ट रसीले फल देते हैं।
(ख) लेखक फलदार वृक्षों की उदारता को मानवीय रूप में व्यक्त कर रहे हैं।
(ग) लेखक का मानना था कि हरिद्वार के सभी दुकानदार बहुत सज्जन थे।
(घ) लेखक को पत्थर मारकर पके हुए फल तोड़कर खाना पसंद था।

**उत्तर:**
(ग) लेखक का मानना था कि हरिद्वार के सभी दुकानदार बहुत सज्जन थे। (★)

प्रश्न 2. "वैराग्य और भक्ति का उदय होता था" इस कथन से लेखक का कौन-सा भाव प्रकट होता है?
(क) शारीरिक थकान और मानसिक बेचैनी
(ख) आर्थिक संतोष और मानसिक विकास
(ग) मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव
(घ) सामाजिक सद्भाव और पारिवारिक प्रेम

**उत्तर:**
(ग) मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव (★)

प्रश्न 3. "पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल से बढ़कर था" इस वाक्य का सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?
(क) संतुष्टि में सुख होता है।
(ख) सुखी लोग पत्थर पर भोजन करते हैं।
(ग) लेखक के पास सोने की थाली नहीं थी।
(घ) पत्थर पर रखा भोजन अधिक स्वादिष्ट होता है।

**उत्तर:**
(क) संतुष्टि में सुख होता है। (★)

प्रश्न 4. "एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।" यह प्रसंग किस मूल्य को बढ़ावा देता है?
(क) अंधविश्वास और लालच
(ख) मानवता और देशप्रेम
(ग) सादगी और आत्मनिर्भरता
(घ) स्वच्छता और प्रकृति प्रेम

**उत्तर:**

(घ) स्वच्छता और प्रकृति प्रेम (★)

प्रश्न 5. लेखक का हरिद्वार अनुभव मुख्यतः किस प्रकार का था?

(क) राजनीतिक

(ख) आध्यात्मिक

(ग) सामाजिक

(घ) प्राकृतिक

**उत्तर:**

(ख) आध्यात्मिक (★)

(घ) प्राकृतिक (★)

प्रश्न 6. पत्र की भाषा का एक मुख्य लक्षण क्या है?

(क) कठिन शब्दों का प्रयोग और बोझिलता

(ख) मुहावरों का अधिक प्रयोग

(ग) सरलता और चित्रात्मकता

(घ) जटिलता और संक्षिप्तता

**उत्तर:**

(ग) सरलता और चित्रात्मकता (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

**उत्तर:** विद्यार्थी स्वयं करें।

## मिलकर करें मिलान

पाठ से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आपस में चर्चा कीजिए और इनके उपयुक्त संदर्भों से इनका मिलान कीजिए-

| क्रम | शब्द | संदर्भ |
|---|---|---|
| 1. | हरिद्वार | 1. मान्यताओं के अनुसार दुर्गा का एक रूप। |
| 2. | गंगा | 2. यह अठारह पुराणों में से सर्वप्रसिद्ध एक पुराण है। इसमें अधिकांश श्री कृष्ण संबंधी कथाएँ हैं। |
| 3. | भगीरथ | 3. यह भारत के उत्तराखंड राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है। |
| 4. | चण्डिका | 4. यह एक पेड़ का नाम है। यह दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलता है। इस पेड़ की सुगंधित छाल दवा और मसाले के काम में आती है। इसे दारचीनी भी कहते हैं। |
| 5. | भागवत | 5. यह भारतवर्ष की एक प्रधान नदी है जो हिमालय से निकलकर लगभग 1560 मील पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अनेक नाम हैं, जैसे— भागीरथी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुरनदी आदि। |
| 6. | दालचीनी | 6. ये अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। कहा जाता है कि ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। इसीलिए गंगा का एक नाम 'भागीरथी' भी है। |

**उत्तर:**

| शब्द | संदर्भ |
|---|---|
| 1. हरिद्वार | 3. यह भारत के उत्तराखंड राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है। |
| 2. गंगा | 5. यह भारतवर्ष की एक प्रधान नदी है जो हिमालय से निकलकर लगभग 1560 मील पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अनेक नाम हैं, जैसे- भागीरथी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुर नदी आदि। |
| 3. भगीरथ | 6. ये अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। कहा जाता है कि ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। इसीलिए गंगा का एक नाम 'भागीरथी' भी है। |
| 4. चण्डिका | 1. मान्यताओं के अनुसार दुर्गा का एक रूप। |
| 5. भागवत | 2. यह अठारह पुराणों में से सर्व प्रसिद्ध एक पुराण है। इसमें अधिकांश श्री कृष्ण संबंधी कथाएँ हैं। |
| 6. दालचीनी | 4. यह एक पेड़ का नाम है। यह दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलता है। इस पेड़ की सुगंधित छाल दवा और मसाले के काम में आती है। इसे दालचीनी भी कहते हैं। |

मिलकर करें चयन

(क) पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं – एक सही और एक भ्रामक। अपने समूह में इन पर विचार कीजिए और उपयुक्त निष्कर्ष पर सही का चिह्न लगाइए।

**उत्तर:**

| पंक्ति | निष्कर्ष |
|---|---|
| 1. पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लह- लहा रही है। | • लताओं का फैलना सज्जनों की शुभ इच्छाओं की तरह सौम्यता और सुंदरता को दर्शाता है। (✓)<br>• सज्जनों की शुभ इच्छाएँ लताओं के समान फैल जाती हैं। |
| 2. बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं। और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं। | • वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहने के लिए विवश हैं।<br>• वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहते हुए तपस्या करते हैं। (✓) |

| | |
|---|---|
| 3. इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं। | • यहाँ के पक्षी प्रकृति में सुरक्षित अनुभव करते हैं, इसलिए वे निडर होकर कल्लोल करते हैं। (✓)<br>• यहाँ के पक्षी नगर से डरकर इस जगह आ गए हैं इसलिए वे कल्लोल करते हैं। |
| 4. जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है। | • गंगाजल की ठंडक और मिठास का अनुभव बहुत मनोहारी है। (✓)<br>• गंगाजल की शीतलता और मिठास से शक्कर और बरफ बनाई जा सकती है। |
| 5. एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया। | • लेखक ने भोजन इसलिए बनाया क्योंकि गंगा का पानी बहुत गरम था और वह पकाने में सहायक था।<br>• लेखक ने गंगा के समीप बैठकर भोजन किया, जिससे उनकी प्रकृति से निकटता झलकती है। (✓) |
| 6. निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। | • लेखक चाहता है कि पत्र को महत्त्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए। (✓)<br>• लेखक चाहता है कि पत्र को महत्त्व देकर प्रकाशित किया जाए। |

**पंक्तियों पर चर्चा**

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए-

(क) "यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है।"

**उत्तर:**

हरिद्वार की कुशा घास बहुत खास है। इसमें दालचीनी और जावित्री जैसी तेज़ और मीठी खुशबू आती है। लेखक कहना चाहते हैं कि यहाँ की घास की यह दिव्य सुगंध बताती है कि यह भूमि साधारण नहीं, बल्कि बहुत पवित्र और पुण्य भूमि है।

(ख) "अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।'

**उत्तर:**

इन पंक्तियों में वृक्षों की महानता बताई गई है। लेखक कहता है कि वृक्ष सबको फल, फूल, छाया, लकड़ी और अन्य चीजें देते हैं। जलने के बाद भी कोयला और राख के रूप में काम आते हैं। इनसे पता चलता है कि वृक्ष हमेशा दूसरों का भला करते हैं।

## सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) "और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ ......."

लेखक का यह वाक्य क्या दर्शाता है? क्या आपने कभी किसी स्थान को छोड़कर ऐसा अनुभव किया है? कब-कब? (संकेत – किसी स्थान से लौटने के बाद भी उसी के विषय में सोचते रहना)

**उत्तर:**

यह वाक्य लेखक के हरिद्वार से गहरे लगाव को बताता है। लेखक कहते हैं कि शरीर कहीं और हो सकता है, लेकिन मन हरिद्वार की पावन भूमि में ही बसा है। मैंने भी ऐसा अनुभव किया है। जब मैं ऋषिकेश गया और वहाँ की सुंदरता देखी, तो घर लौटकर भी मन वहीं अटका रहा। शरीर घर पर था पर मन ऋषिकेश की यादों में ही खोया रहा।

(ख) "पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।"

लेखक का यह कथन आज के समाज में कितना सच है? क्या अब भी ऐसे संतोषी लोग मिलते हैं? अपने विचार उदाहरण सहित लिखिए।

**उत्तर:**

आज के समाज में यह बात कुछ हद तक सही है। कुछ लोग सच में सादा जीवन और संतोष में विश्वास करते हैं, जैसे गाँव या पहाड़ों में रहने वाले साधु, किसान और शिक्षक। वे कम साधनों में भी खुश रहते हैं। लेकिन कुछ लोग केवल बाहर से संतोष दिखाते हैं, जबकि अंदर से वे असंतुष्ट रहते हैं।

(ग) "मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।"

आपके विचार से लेखक ने उस स्थान को 'टिकने योग्य' क्यों कहा है? उस स्थान में कौन-कौन सी विशेषताएँ होंगी जो उसे 'टिकने योग्य' बनाती होंगी? (संकेत – केवल आराम, सुविधा या कोई और कारण भी।)

**उत्तर:**

लेखक ने दीवान कृपा राम के बंगले को 'टिकने योग्य' इसलिए कहा है क्योंकि वह हरिद्वार में था। हरिद्वार धार्मिक और प्राकृतिक सुंदरता से भरा स्थान है। गंगा नदी, शांत वातावरण और तीर्थस्थल होने के कारण वहाँ का बंगला मन को बहुत सुकून देने वाला था।

(घ) "फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।'

इस वाक्य के माध्यम से आपको वृक्षों के महत्त्व के बारे में कौन-कौन सी बातें सूझ रही हैं?

**उत्तर:**

वृक्ष हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

- इनके फल, फूल, पत्ते, बीज, लकड़ी, छाल और जड़ सब उपयोगी होते हैं।
- जलने के बाद भी इनकी राख और कोयला काम आता है।
- ये हमें छाया और सुगंध देकर सुख पहुँचाते हैं।
- वृक्ष निःस्वार्थ भाव से सबको लाभ देते हैं, इसलिए ये त्याग और परोपकार के प्रतीक हैं।

**अनुमान और कल्पना से** *(छात्र अपनी कल्पना और अनुमान पर उत्तर दें)*

(क) "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है। कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार में हैं। आप वहाँ क्या-क्या करना चाहेंगे?

**उत्तर:**

अगर मैं हरिद्वार जाऊँ तो वहाँ कई काम करना चाहूँगा।

- सबसे पहले मैं हर की पैड़ी पर गंगा स्नान करूँगा। इससे मन और आत्मा दोनों शुद्ध होते हैं।
- शाम को गंगा आरती देखूँगा। दीपों की रोशनी और मंत्रों की ध्वनि से मन को बहुत शांति मिलती है।
- मैं मनसा देवी और चंडी देवी मंदिर के साथ-साथ अन्य मंदिरों के दर्शन करूँगा।
- हरिद्वार के स्वादिष्ट खाने जैसे कचौड़ी, जलेबी और आलू-पूड़ी भी चखूँगा।
- स्थानीय बाज़ार से रुद्राक्ष, पूजा सामग्री और गंगाजल खरीदूँगा।
- पतंजलि योगपीठ और शांति कुञ्ज जैसे आश्रमों में जाऊँगा।
- गंगा किनारे बैठकर ठंडी हवा और बहते जल की आवाज़ का आनंद लूँगा।

(ख) "जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे।" कल्पना कीजिए कि आप गंगा के तट पर हैं और पानी के छींटे आपके मुँह पर आ रहे हैं। अपने अनुभवों को अपनी कल्पना से लिखिए।

**उत्तर:**

मैं गंगा तट पर बैठा हूँ। सूरज की किरणें जल को सुनहरा बना रही हैं। ठंडी हवाएँ मेरे चेहरे को छू रही हैं और गंगा की लहरें मुझे हल्के छींटों से भिगो रही हैं। ऐसा लगता है जैसे माँ गंगा मुझे आशीर्वाद दे रही हों। इन छींटों की ठंडक से मेरा मन और शरीर दोनों शांत हो रहे हैं। भीड़ के बीच भी मैं भीतर से बहुत शांत और स्थिर महसूस कर रहा हूँ।

(ग) "सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।"

यदि पेड़-पौधे सच में मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो क्या होगा?

**उत्तर:**

अगर पेड़-पौधे सचमुच मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें, तो वे हमसे बात करेंगे और पूछेंगे कि हमने उन्हें क्यों काटा। वे अपनी इच्छाएँ और दुःख बताएँगे। फल देने से पहले कहेंगे कि "पहले हमें पानी दो।" हर पेड़ का परिवार होगा और जंगलों में पंचायतें होंगी। गमले वाले पौधे खुली जगह माँगेंगे और रोज़ पानी माँगेंगे। वे मनुष्यों से कहेंगे – "हम तुम्हें ऑक्सीजन देते हैं, बदले में हमारी रक्षा करो।"

(घ) "यहाँ पर श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं – एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से।
इस पाठ में 'गंगा' शब्द के साथ 'श्री' और 'जी' लगाया गया है। आपके अनुसार उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

उत्तर:

"गंगा" के साथ 'श्री' और 'जी' लगाने का कारण यह है कि लोग गंगा को देवी मानते हैं। इससे सम्मान और श्रद्धा प्रकट होती है। भाषा में भक्ति, मर्यादा और भावनात्मक जुड़ाव भी दिखाई देता है।

(ङ) कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार एक श्रवणबाधित (सुनने में असमर्थ) या दृष्टिबाधित (देखने में असमर्थ) व्यक्ति के साथ गए हैं। उसकी यात्रा को अच्छा बनाने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर:

**श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए यात्रा सुझाव**

1. **संकेत और लिखित सूचना दें** – आरती, दर्शन, भोजन आदि की जानकारी लिखकर दें या संकेत भाषा/ऐप की मदद लें।
2. **दृष्टिगत जानकारी बढ़ाएँ** – संकेत चिह्न और लिखित विवरण से स्थान या इतिहास बताएं।
3. **सुरक्षा पर ध्यान दें** – भीड़ वाले स्थानों में साथ रहें; आपात स्थिति का संपर्क कार्ड जेब में रखें।

**दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिए यात्रा सुझाव**

1. **साथ-साथ चलें** – हाथ पकड़कर या कंधे पर हाथ रखवाकर सावधानी से चलाएँ।
2. **सुनने का अनुभव दें** – गंगा की लहरें, मंदिर की घंटियाँ, आरती का संगीत सुनाएँ।
3. **वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग करें** – "यहाँ जल ठंडा है, हल्की हवा चल रही है, फूलों की खुशबू आ रही है …"
4. **स्पर्श अनुभव दें** – मंदिर की दीवारें, जल, फूल छूने दें ताकि वे भावनात्मक रूप से जुड़ सकें।

**लिखें संवाद**

(क) "मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे।" लेखक और कल्लू जी के बीच हरिद्वार यात्रा पर एक काल्पनिक संवाद लिखिए।

उत्तर:

*विद्यार्थी स्वयं करें।*

**दृश्य:** हरिद्वार में हर की पौड़ी का घाट, शाम का समय, गंगा आरती की तैयारी हो रही है।

**लेखक:** वाह कल्लू जी! क्या अद्भुत दृश्य है! गंगा का यह प्रवाह, ये घंटियों की ध्वनि और अब बस आरती शुरू होने ही वाली है। मन में एक अलग ही शांति का अनुभव हो रहा है।

**कल्लू जी:** (आँखें बंद किए, चेहरे पर एक शांत मुस्कान के साथ) अरे मित्र, अनुभव मत करो, बस डूब जाओ। देखने और सोचने में क्या रखा है? जो है, बस यही है। यही तो परमानंद है।

**लेखक:** (हैरानी से) डूब जाऊँ? मतलब? अरे, अभी तो हमें आरती के बाद प्रसाद भी लेना है, फिर रात के भोजन की भी व्यवस्था देखनी है। कल सुबह की ट्रेन भी तो है।

**कल्लू जी:** (हँसते हुए) मित्र, ट्रेन तो कल सुबह आएगी, भोजन भी पेट में ही जाएगा। पर ये जो क्षण है न, यह दोबारा नहीं आएगा। गंगा मैया बुला रही हैं और तुम भोजन की चिंता में पड़े हो। छोड़ो सब कुछ, बस इस बहते जल का संगीत सुनो।

**लेखक:** (मुस्कुराते हुए) आपकी बातें भी निराली हैं, कल्लू जी। लोग यहाँ आकर मन्नतें माँगते हैं, भविष्य की कामना करते हैं और आप हैं कि बस वर्तमान में ही खोए हैं।

**कल्लू जी:** (एक दीया पानी में छोड़ते हुए) कामना और चिंता तो व्यापार है, मित्र। मैं तो यहाँ बस डुबकी लगाने आया हूँ... आनंद की डुबकी। देखो उस दीये को, लहरों के साथ कैसा नाच रहा है। न उसे कल की चिंता, न किनारे की। बस बह रहा है। वही तो आनंद है। चलो, तुम भी एक दीया छोड़ो और सब भूल जाओ।

**लेखक:** (एक दीया पानी में छोड़ते हुए) सच कहा आपने... मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे। आपकी संगत में चिंताएँ सचमुच खो जाती हैं।

(ख) "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।
लेखक और प्रकृति के बीच एक कल्पनात्मक संवाद तैयार कीजिए- जैसे पर्वत बोल रहे हों।

**उत्तर:**

*विद्यार्थी स्वयं करें।*

**दृश्य:** लेखक एक शांत, सुंदर घाटी में खड़ा है, जो तीन ओर से हरे-भरे पर्वतों से घिरी है। हल्की हवा चल रही है और पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा है।

**लेखक:** (स्वयं से) वाह! क्या अद्भुत और शांत जगह है। यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है। ऐसा लगता है मानो ये पर्वत किसी माँ की तरह इस घाटी को अपनी गोद में समेटे हुए हैं। कितनी सुरक्षा और शांति है यहाँ!

**पर्वत:** (एक शांत, गहरी और गूंजती हुई आवाज में) स्वागत है, मनुष्य! तुम केवल शांति ही नहीं, हमारा प्राचीन आलिंगन भी महसूस कर रहे हो।

**लेखक:** (चौंककर इधर-उधर देखता है) कौन? यह आवाज़ कहाँ से आई? यहाँ तो मेरे सिवा और कोई नहीं है। क्या यह मेरा भ्रम है?

**पर्वत:** (उसी शांत आवाज़ में) यह कोई भ्रम नहीं है। हम बोल रहे हैं, जिन्हें तुम पर्वत कहते हो। हम युगों से यहीं खड़े हैं, इस भूमि के प्रहरी बनकर।

**लेखक:** (आश्चर्य और विस्मय से) पर्वत बोल रहे हैं! मुझे विश्वास नहीं हो रहा। आप... आप तो निर्जीव और मौन समझे जाते हैं।

**पर्वत:** (मुस्कुराते हुए, मानो हवा में सरसराहट हुई हो) हमारा मौन हमारी भाषा है, जिसे केवल शांत हृदय ही सुन सकता है। तुम जिसे 'निर्जीव' कहते हो, वही तो जीवन का आधार है। हम अपनी छाती पर जंगल उगाते हैं, नदियों को जन्म देते हैं और अनगिनत जीवों को आश्रय देते हैं।

**लेखक:** पर आप सदियों तक एक ही स्थान पर स्थिर खड़े रहते हैं। क्या आपको कभी अकेलापन या ऊब महसूस नहीं होती? हम मनुष्य तो हमेशा बदलाव और गति चाहते हैं।

**पर्वत:** (गंभीरता से) जिसे तुम 'स्थिरता' कहते हो, वह हमारा 'धैर्य' है। हम हर मौसम को जीते हैं - गर्मी की धूप, मानसून की वर्षा और सर्दियों की ठंड। हम बादलों को खेलते, सूरज को उगते-डूबते और तारों को चमकते देखते हैं। हमारी स्थिरता में ही सृष्टि का शाश्वत संगीत छिपा है। तुम मनुष्यों ने इस संगीत को अपने कोलाहल में खो दिया है।

**लेखक:** (नतमस्तक होकर) आपने मेरी आँखें खोल दीं। मैं यहाँ केवल एक सुंदर दृश्य देखने आया था, पर मुझे जीवन का एक गहरा सत्य मिल गया। आपका मौन, आपका धैर्य और आपकी शक्ति सचमुच प्रेरणादायक है।
**पर्वत:** जब भी शहर के शोर से थक जाओ, तो हमारे मौन को सुनने चले आना। हम यहीं तुम्हारा इंतजार करेंगे।

**'है' और 'हैं' का उपयोग**

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए-

- विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं।
- यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं। आप जानते ही हैं कि एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'है' का प्रयोग किया जाता है और बहुवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'हैं' का। सोचिए, 'गंगा' शब्द एकवचन है, फिर भी इसके साथ 'हैं' क्यों लिखा गया है?

इसका कारण यह है कि कभी-कभी हम आदर-सम्मान प्रदर्शित करने के लिए एकवचन संज्ञा शब्दों को भी बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं। इसे 'आदरार्थ बहुवचन' प्रयोग कहते हैं। उदाहरण के लिए–

- मेरे पिता जी सो रहे हैं।
- भारत के प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।

अब 'आदरार्थ बहुवचन' को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न 1. प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं ………… वे अभी सभा में उपस्थित ……….।
उत्तर: हैं, हैं

प्रश्न 2. माता – पिता हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते ………., हमें उनका कहना मानना चाहिए।
उत्तर: हैं

प्रश्न 3. मेरी बहन बाज़ार जा रही ………….. वहाँ से किताबें ले आएगी।
उत्तर: है

प्रश्न 4. बाहर फेरीवाला ……….. ………… ………… बुला लाओ।
उत्तर: जा रहा है, उसे

प्रश्न 5. डाकिया जी आए ………। उन्हें भी बुला लाओ।
उत्तर: हैं

प्रश्न 6. आप तो बहुत दिन बाद ............., ........... का स्वागत है।

**उत्तर:**

आए हैं,

प्रश्न 7. डॉक्टर साहब बहुत विद्वान ............., ............... से परामर्श लेना चाहिए।

**उत्तर:** हैं, उन

प्रश्न 8. आपके माता-पिता कहाँ ............? क्या मैं .......... से मिल सकता हूँ?

**उत्तर:** हैं, उन

प्रश्न 9. ये हमारे हिंदी के अध्यापक ........... हम .......... से बहुत-कुछ सीखते-समझते हैं।

**उत्तर:** हैं, उन

प्रश्न 10. बंदर पेड़ पर उछल-कूद कर ......... ......... ।

**उत्तर:** रहा है

**भावों की पहचान**

प्रेम, संतोष, भक्ति, श्रद्धा, वैराग्य, आश्चर्य

करुणा, हास्य, शांति, परोपकार, दया, दुःख

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। सोचिए कि इनमें कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है? पहचानिए और चुनकर लिखिए-

प्रश्न 1. उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।

**उत्तर:** संतोषी, प्रेम

प्रश्न 2. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

**उत्तर:** श्रद्धा, भक्ति

प्रश्न 3. पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं।

**उत्तर:** हास्य, आश्चर्य

प्रश्न 4. हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।

**उत्तर:** शांति, करुणा

प्रश्न 5. सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।

**उत्तर:** परोपकार, दया

**काल की पहचान**

"यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है।'

आप जानते ही होंगे कि काल के तीन भेद होते हैं- :- भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। परस्पर चर्चा करके पता लगाइए कि ऊपर दिए गए वाक्य में कौन-सा काल प्रदर्शित हो रहा है? सही पहचाना, यह वाक्य वर्तमान काल को प्रदर्शित कर रहा है।

(क) नीचे दी गई पाठ की इन पंक्तियों को पढ़कर बताइए, इनमें क्रिया कौन-से काल को प्रदर्शित कर रही है? (भूतकाल / वर्तमान / भविष्य)

प्रश्न 1. निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। ......................

**उत्तर:**

भविष्य काल

प्रश्न 2. यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है। ......................

**उत्तर:**

वर्तमान काल

प्रश्न 3. वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल देते हैं। ......................

**उत्तर:**

वर्तमान काल

प्रश्न 4. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। ......................

**उत्तर:**

भूतकाल

प्रश्न 5. मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। ......................

**उत्तर:**

भूतकाल

(ख) अब इन वाक्यों के काल को अन्य कालों में बदलकर लिखिए और नए वाक्य बनाइए।

**उत्तर:**

1. **वर्तमान काल**
    - निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दे रहे हैं।
      **भूतकाल -** निश्चय था कि आपने इस पत्र को स्थानदान दिया।
2. **भूतकाल**
    - यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी थी।
      **भविष्य काल -** यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी होगी।

3. **भूतकाल**

- वृक्ष ऐसे थे कि पत्थर मारने से फल देते थे।

  **भविष्य काल** - वृक्ष ऐसे होंगे कि पत्थर मारने से फल देंगे।

4. **वर्तमान काल**

- चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता है।

  **भविष्य काल -** चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होगा।

5. **वर्तमान काल**

- मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले में टिका हूँ।

  **भविष्य काल -** मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले में टिकूँगा।

**पत्र की रचना**

"और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ………"

इस पंक्ति में लेखक संपादक महोदय को संबोधित करके अपनी बात लिख रहे हैं। आप जानते ही होंगे कि पत्र जिस व्यक्ति के लिए लिखा जाता है, उसे संबोधित किया जाता है। पत्र के अंत में अपना नाम लिखा जाता है ताकि पत्र पाने वाले को पता चल सके कि पत्र किसने लिखा है।

नीचे इस पत्र की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं से जुड़े वाक्यों से इनका मिलान कीजिए-

आप एक विशेषता को एक से अधिक वाक्यों से भी जोड़ सकते हैं।

**उत्तर:**

| पत्र की विशेषताएँ | पत्र से उदाहरण |
|---|---|
| 1. व्यक्तिपरकता-पत्र लेखन में लेखक के विचार, अनुभव और भावनाएँ प्रमुख होते हैं। | हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिकता, साधु-संन्यासियों का जीवन, नदी, पर्वत, जल, गंगा स्नान आदि का अत्यंत विस्तार से वर्णन \|<br>जैसे- "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है ……." |
| 2. संवादात्मकता-पत्र का रूप है; पाठक से सीधा संवाद होता है। | और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ… |
| 3. स्वाभाविक शैली-भाषा कृत्रिम नहीं होती; भावनाओं के अनुरूप होती है। | "ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया …" |
| 4. व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन-जहाँ लेखक अपने वास्तविक अनुभव को साझा करता है। | एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके …….. |

| | |
|---|---|
| 5. अभिवादन या संबोधन – पत्र का आरंभ, जिसमें संबोधित व्यक्ति को आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है। | श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु ! |
| 6. हस्ताक्षर – लेखक अपने नाम या संबंध से पत्र को समाप्त करता है। | आपका मित्र – यात्री |
| 7. उपसंहार और निवेदन – लेखक पत्र समाप्त करता है \| और अपनी इच्छा या निवेदन प्रकट करता है। | और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ... निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। |
| 8. मुख्य विषय-वस्तु | मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है .... |

**पत्र**

आपने जो यात्रा – वर्णन पढ़ा है, इसे भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक संपादक को पत्र के रूप में लिखकर भेजा था। आप भी अपनी किसी यात्रा के विषय में अपने किसी परिचित को पत्र लिखकर बताइए |

**उत्तर:**

प्रिय मित्र शशांक

सप्रेम नमस्कार,

आशा है कि तुम सपरिवार कुशलपूर्वक होंगे। मैं यहाँ स्वस्थ और प्रसन्न हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं तुम्हें अपनी हाल ही की हरिद्वार यात्रा का वर्णन करना चाहता हूँ, जो मेरे जीवन की सबसे अविस्मरणीय यात्राओं में से एक रही।

पिछले सप्ताह मैं अपने परिवार के साथ हरिद्वार गया। जैसे ही हमने गंगा के पावन तट पर कदम रखा, मन एक अलौकिक शांति से भर गया। गंगा की कलकल ध्वनि मानो मन के सारे क्लेशों को बहा ले जाती थी। हर-हर गंगे के घोष के बीच जब हमने गंगा स्नान किया, तो ऐसा लगा मानो आत्मा भी पवित्र हो गई हो।

हमने हर की पैड़ी पर संध्या आरती देखी। सैकड़ों दीपों की रोशनी जब गंगा जल में झिलमिलाने लगी, तो वह दृश्य इतना मनोहारी था कि शब्दों में वर्णन कर पाना कठिन है। चारों ओर भक्तों की आस्था और भक्ति की गूँज थी।

इसके पश्चात हमने मनसा देवी और चंडी देवी के दर्शन किए। पर्वत पर स्थित ये मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं। रोपवे से ऊपर जाते समय पूरा हरिद्वार शहर और गंगा नदी का दृश्य दिखाई देता है, जो अत्यंत रमणीय होता है।

इस यात्रा ने न केवल मुझे धार्मिक रूप से छू लिया, बल्कि प्रकृति की गोद में बिताया गया समय मेरे मन को भी बहुत शांति दे गया। यदि अवसर मिले तो मैं तुम्हें भी यही यात्रा करने की सलाह दूँगा। यकीन मानो, यह अनुभव जीवन-भर याद रहेगा। शेष कुशल है। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र

हिमांशु

**शब्द से जुड़े शब्द**

नीचे दिए गए स्थानों में 'हरिद्वार' से जुड़े शब्द अपने मन से या पाठ से चुनकर लिखिए-

**उत्तर:**

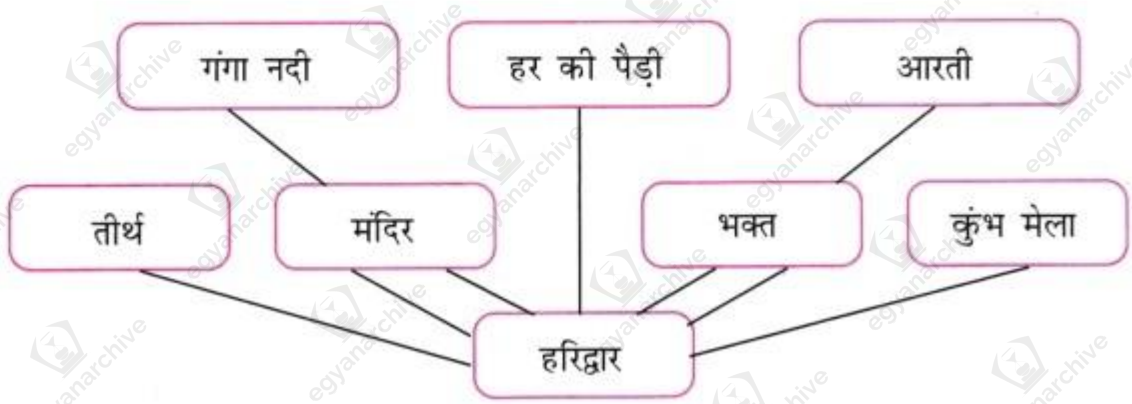


**लेखन के अनोखे तरीके**

(क) 'हरिद्वार' पाठ में लेखक ने हरिद्वार के अपने अनुभवों को बहुत ही साहित्यिक और कल्पनाशील भाषा में प्रस्तुत किया है जिसमें कई स्थानों पर उन्होंने तुलनात्मक वाक्यों के माध्यम से दृश्यों का वर्णन किया है। जैसे- हरी-भरी लताओं की तुलना सज्जनों से इस प्रकार की गई है-

"पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।"

नीचे कुछ तुलनात्मक वाक्य दिए गए हैं। पाठ में ढूँढ़िए कि इन तुलनात्मक वाक्यों को लेखक ने किस प्रकार विशिष्ट तरीके से लिखा है यानी विशिष्टता प्रदान की है?

प्रश्न 1. वृक्षों की तुलना साधुओं से की गई है।

**उत्तर:**

बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानों एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।

प्रश्न 2. गंगाजल की मिठास की तुलना चीनी से की गई है।

**उत्तर:**

जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।

प्रश्न 3. हरियाली की तुलना गलीचे से की गई है।

**उत्तर:**

वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचे की जात्रियों के विश्राम हेतु बिछायत बिछी थी।

प्रश्न 4. नदी की धारा की तुलना राजा भगीरथ के यश (कीर्ति) से की गई है।

**उत्तर:**

एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगा जी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता – सी दिखाई देती है।

(ख) "मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है।" "पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।" उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान से देखिए, ये आज की हिंदी की तरह नहीं लिखी गई हैं। इसे लेखक ने न केवल अपनी शैली में लिखा है, अपितु इसमें प्राचीन हिंदी भाषा की छवि भी दिखाई देती है। नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं आप इन्हें आज की हिंदी में लिखिए।

प्रश्न 1. "इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।"

**उत्तर:**

इन पेड़ों पर रंग-बिरंगे पक्षी निर्भय होकर चहचहाते हैं और शहर के शोरगुल से बेपरवाह होकर आनंदपूर्वक खेलते हैं।

प्रश्न 2. "वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दृष्टि पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी।"

**उत्तर:**

वर्षा के मौसम में चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखती है, जैसे हर तरफ हरे कालीन बिछाए गए हों, जो विश्राम के लिए आमंत्रित करते हों।

प्रश्न 3. "यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं।"

**उत्तर:**

यह एक ऐसा निर्मल तीर्थ है जहाँ काम और क्रोध- जैसी भावनाओं से युक्त मनुष्य वहाँ वास तक नहीं करता।

प्रश्न 4. "मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।"

**उत्तर:**

मैं वहाँ पहुँचते ही इतना प्रसन्न और निर्मल अनुभव करने लगा कि शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है।

प्रश्न 5. "यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया।"

**उत्तर:**

यहाँ रात में ग्रहण लगा; हमने उस दौरान आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पाठ भी किया।

प्रश्न 6. "उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।"

**उत्तर:**

उस समय – सीलन में मिले साधारण भोजन का आनंद तो सोने की थाली में परोसे जाने वाले व्यंजनों से भी कहीं अधिक था।

प्रश्न 7. “निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।”

**उत्तर:**

कृपया इस पत्र को उचित स्थान प्रदान करने की कृपा करें।

(ग) इस रचना में हरिश्चंद्र जी ने कहीं-कहीं प्राचीन वर्तनी का प्रयोग किया है, जैसे-शिखर के लिए शिषर, यात्रियों के लिए जात्रियों। ऐसे शब्दों की सूची बनाइए। आप इन शब्दों को कैसे लिखते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

**उत्तर:**

- प्राचीन वर्तनी – आधुनिक वर्तनी
- शिवर – शिखर
- जात्रियों – यात्रियों
- घाम – धूप
- अर्थी – याचक
- बिछायत – बिछौना
- मिष्ट – मीठा
- खानि – युक्त

## पाठ से आगे

**आपकी बात**

प्रश्न 1. “मैंने गंगा जी के तट पर रसोई करके... भोजन किया”

क्या आपने कभी खुले वातावरण में या प्रकृति के पास भोजन किया है? वह अनुभव घर के खाने से कैसे भिन्न था?

**उत्तर:**

हाँ, हमने खुले वातावरण में भोजन किया है। स्वच्छ और खुली हवा में खाना खाने पर मुझे लगता है कि खाना ज़्यादा स्वादिष्ट और ताज़ा लगने लगता है। प्रकृति के बीच पेड़ों की सरसराहट, पक्षियों की चहचहाहट, हल्की हवा, इन सबकी उपस्थिति खाने को ‘“इस पल में जीने” जैसा एहसास देती है। घर में हम अक्सर टीवी, फोन या चर्चा में बह जाते हैं, लेकिन बाहर ध्यान केंद्रित रहता है जिससे हर कौर का स्वाद गहराई से महसूस होता है।

प्रश्न 2. “उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।” आपके जीवन में ऐसा कोई क्षण आया, जब किसी सामान्य-सी वस्तु ने आपको गहरा सुख दिया हो? उसके बारे में बताइए।

**उत्तर:**

हाँ, मेरे जीवन में कई ऐसे पल आए हैं जब सबसे साधारण चीज़ ने गहरा सुख दिया और एक यादगार तारीख बना दिया।

एक ठंडी सुबह, मैं घर की बालकनी में बैठा था। आस-पास सिर्फ पत्तों की सरसराहट थी और दूर पक्षियों की चहचहाहट। मेरी माँ ने मुझे एक साधारण चाय का प्याला दिया। उस एक प्याली में मुझे न केवल स्वाद मिला, बल्कि

एक घर की भावना, संबंध और माँ की ममता का एहसास हुआ। उतना साधारण, फिर भी कितना गहन – एक उस पल ने जीवन को गहराई से महसूस करने में मदद की।

प्रश्न 3. "हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।"
आपको किस स्थान पर पवित्रता और प्रसन्नता का अनुभव होता है? क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ जाते ही मन शांत हो गया हो? उस स्थान की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

**उत्तर:**

मेरे लिए सबसे पवित्र और सुखद अनुभव तब होता है जब मैं किसी शांत प्राकृतिक स्थल पर होता हूँ, जैसे पहाड़ी, झील या नदी किनारा। वहाँ मेरा मन तनावमुक्त हो जाता है। अच्छी बातें हैं:

1. हरी-भरी घाटियाँ, बहती नदियाँ और पेड़ों की सरसराहट।
2. कोई भीड़-भाड़ या शोर नहीं।
3. बिना किसी दबाव के पूरी आज़ादी महसूस होना।

प्रश्न 4. पाठ में वर्णित है, यहाँ के वृक्ष "फल, फूल, गंध... जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"
क्या आपके जीवन में कोई पेड़, फूल या प्राकृतिक वस्तु है जिससे आप विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं? क्यों?

**उत्तर:**

मेरे लिए प्रकृति की खास वस्तु बरगद का पेड़ है। इसका मेरे साथ गहरा संबंध है क्योंकि:

1. इसकी मजबूत जड़ें और विशाल तना मुझे धैर्य और स्थिरता का संदेश देते हैं।
2. इसके तले बैठने पर ऊर्जा और शांति का अनुभव होता है।
3. बचपन की यादें, त्योहार और मिलन यहाँ से जुड़ी हैं।
4. छाया, पत्तों की आवाज़ और पक्षियों की चहचहाहट ताज़गी और सुख देती है।

**प्रकृति का सौंदर्य और संरक्षण**

"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है....
आपने पत्र में पढ़ा कि हरिद्वार का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। इस सौंदर्य को बनाए रखने में प्रत्येक मानव की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस विषय में अपने समूह में चर्चा कीजिए। इसके बाद अपने समूह के साथ मिलकर "तीर्थ ही नहीं, पृथ्वी भी पावन हो! " विषय पर जन-जागरूकता पोस्टर बनाइए।

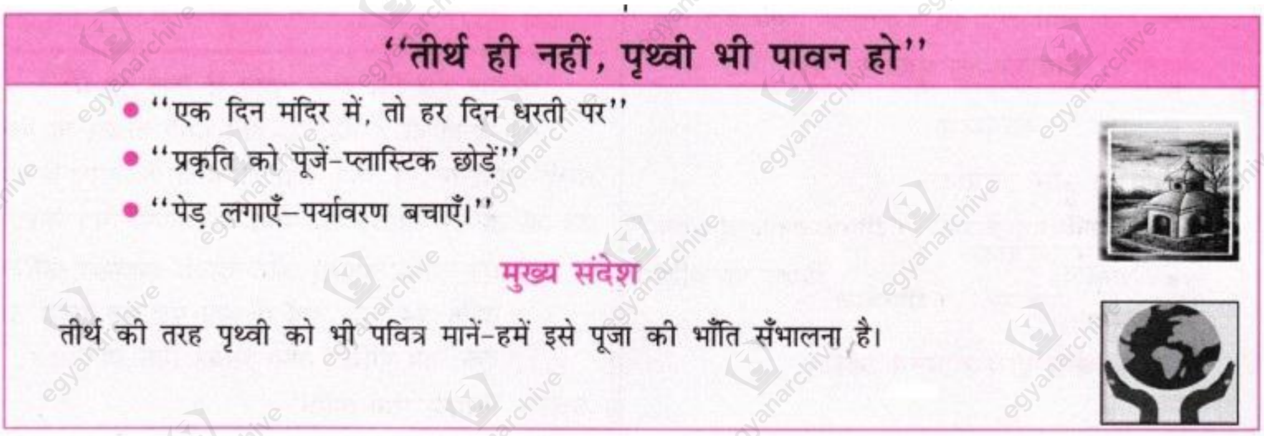

**स्वास्थ्य और योग**

"चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।"

अनेक लोग आज भी मन की शांति, स्वास्थ्य लाभ और भक्ति के लिए तीर्थ और पर्वतीय स्थानों की यात्रा करते हैं। मन की शांति और स्वास्थ्य के लिए हमारे देश में हजारों वर्षों से योग भी किया जाता रहा है।

(क) 5 मिनट ध्यान लगाकर या मौन बैठकर अपने आस-पास की ध्वनियों को सुनिए, अपनी श्वास पर ध्यान दीजिए तथा ध्यान को केंद्रित करने का प्रयास कीजिए। इस अनुभव के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

**उत्तर:**

मैंने 5 मिनट के लिए ध्यान लगाया और मौन बैठा। सबसे पहले मैंने अपनी श्वास पर ध्यान दिया—साँस अंदर लेना और बाहर छोड़ना महसूस किया। फिर अपने आस-पास की ध्वनियाँ सुनी—पक्षियों की चहचहाहट, हवा की हल्की सरसराहट और दूर से आती आवाज़ें। शुरुआत में मन भटक रहा था, लेकिन धीरे-धीरे मेरा ध्यान केंद्रित हो गया और मन शांत महसूस हुआ। यह अनुभव बहुत अच्छा और आरामदायक था। मुझे ऐसा लगा जैसे सारी उलझनें और तनाव धीरे-धीरे दूर हो रहे हों और मन हल्का और ताजगी भरा हो गया।

(ख) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अपने विद्यालय के कार्यक्रमों को बताने के लिए एक 'सूचना' लिखिए जिसे सूचना पट पर लगाया जा सके।

**उत्तर:**

**सूचना**

विषय : अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – 2026 पर विद्यालय – कार्यक्रम

दिनांक : रविवार, 21 जून 2026

समय : प्रातः 7 : 30 बजे से 9 : 00

बजे तक स्थान : विद्यालय का मुख्य प्रांगण।

**कार्यक्रम**

1. **प्रार्थना और उद्घाटन**
    - "अतिथि/प्रधानाचार्य द्वारा दीप प्रज्वलन एवं संदेश"
    - "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" विषय पर संक्षिप्त संबोधन।
2. **विद्यार्थियों द्वारा सामान्य आसन**
3. **विशेष सत्र**
    - अनुभवी योग शिक्षक द्वारा निर्देशितः तनाव मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य |
    - स्वस्थ जीवनशैली हेतु योग के लाभों पर मार्गदर्शन
4. **समापन**
    - धन्यवाद ज्ञापन
    - सामूहिक "ओम" उच्चारण
5. **अन्य गतिविधियाँ**
    - योग-संबंधी पेंटिंग / पोस्टर प्रतियोगिता

- योग विषयक निबंध / व्याख्यान प्रतियोगिता। कृपया निम्न निर्देशों का पालन करें-
- ड्रेस कोड – हल्का, आरामदायक पोशाक, योग मित्रवत।
- वस्तुएँ लाएँ – योग – मैट या तौलिया, पानी की बोतल।
- उपस्थिति-दिनांक 21 जून को सुबह 7:20 बजे तक विद्यालय पहुँचना अनिवार्य है।
- भागीदारी – सभी छात्र, शिक्षक व कर्मचारी अनिवार्य रूप से शामिल हों।

सूचना जारीकर्ता
प्राचार्य
(अ.ब.स. विद्यालय)
**प्रेषित:** कक्षा शिक्षकगण, सूचना बोर्ड प्रभारी, योग समन्वयक।
***आइए – इस योग दिवस पर हम सब मिलकर "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" का संदेश फैलाएँ और अपनी पर्यावरण की भलाई में योग की भूमिका को समझें।***

**सज्जन वृक्ष**

"सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।"
आप जानते ही हैं कि पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। किंतु हमारे ही कार्यों के कारण वे कम होते जा रहे हैं। आइए, पेड़-पौधों को अपना मित्र बनाएँ।
(क) एक पौधा लगाइए और उसकी देखभाल कीजिए ताकि वह कुछ वर्षों में बड़ा पेड़ बन सके। उसे एक नाम दीजिए और उसका मित्र बनिए।
**उत्तर:** *विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

(ख) उसके बारे में अपनी दैनंदिनी में नियमित रूप से लिखिए।
**उत्तर:** *विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

**अपने शब्द**

"शीतल वायु... स्पर्श ही से पावन करता हुआ संचार करता है।"
आइए, एक रोचक गतिविधि करते हैं। 'शीतल' शब्द को केंद्र में रखिए और उसके चारों ओर ये चार बातें लिखिए।
**उत्तर:**

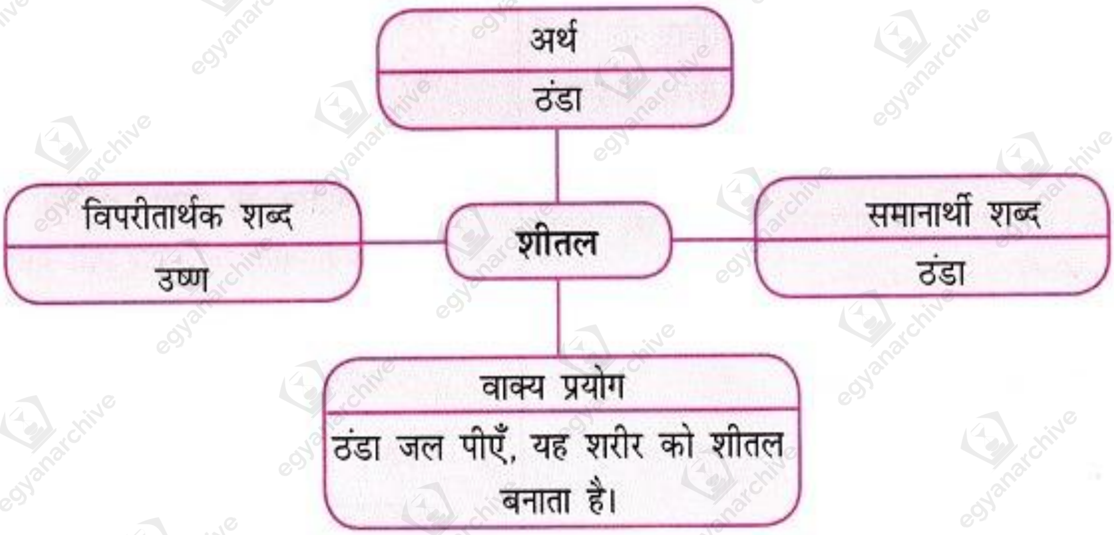

अब इसी प्रकार आपके समूह का प्रत्येक सदस्य इस पत्र से एक-एक शब्द चुनकर उसके लिए ऐसा ही शब्द-चित्र बनाए।

**उत्तर:**

*विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

**यात्रा के व्यय की गणना**

इस पत्र में आपने हरिद्वार की एक यात्रा का वर्णन पढ़ा है। मान लीजिए कि आपको अपने मित्रों या अभिभावकों के साथ अपनी रुचि के किसी स्थान की यात्रा करनी है। उस स्थान को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) मान लीजिए कि यात्रा के लिए आपको ₹1000 दिए गए हैं। यात्रा, खाना आदि सब मिलाकर एक व्यय विवरण बनाइए।

**उत्तर:**

*विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

मान लीजिए मुझे यात्रा के लिए ₹1000 मिले हैं। मैंने इसका व्यय इस प्रकार योजना बनाई है—

**व्यय विवरण:**

1. **यात्रा (बस/ट्रेन/स्थानीय परिवहन)** – ₹400
2. **भोजन (नाश्ता, दोपहर, हल्का नाश्ता)** – ₹300
3. **दर्शन/प्रवेश शुल्क (मंदिर या आश्रम)** – ₹100
4. **स्थानीय सामान/स्मृति चिन्ह** – ₹100
5. **अन्य छोटे खर्च (पानी, चाय, अप्रत्याशित खर्च)** – ₹100

**कुल खर्च:** ₹1000

इस प्रकार ₹1000 में यात्रा, खाना और अन्य आवश्यक खर्च का पूरा प्रबंध किया जा सकता है।

(ख) मान लीजिए कि आप इस यात्रा में एक छोटी वस्तु (स्मृति चिह्न) खरीदना चाहते हैं। आप क्या खरीदेंगे और क्यों?

(संकेत – सोचिए, क्या वह आवश्यक है? बजट कैसे संभालेंगे?)

**उत्तर:**

*विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

मैं इस यात्रा में एक **गंगाजल की छोटी बोतल** या **रुद्राक्ष** खरीदना चाहूँगा।

**क्यों:**

1. यह स्मृति चिह्न धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
2. इसे घर ले जाकर पूजा या याद के रूप में रख सकता हूँ।
3. यह बहुत महँगी नहीं है, इसलिए बजट पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

इस प्रकार, यह छोटी वस्तु यादगार भी है और बजट के अनुकूल भी।

**यात्रा सबके लिए**

(क) कल्पना कीजिए कि कुछ मित्रों का समूह एक यात्रा पर जा रहा है। आप एक मार्गदर्शक या टूरिस्ट गाइड हैं। आप इन सबकी यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

उपर्युक्त चित्र में सबकी अलग-अलग आवश्यकताएँ हो सकती हैं। इन्हें ध्यान में रखते हुए सोचिए कि वहाँ पहुँचने, घूमने, भोजन आदि में आप कैसे सहायता करेंगे?

**उत्तर:**

यात्रा सुविधाजनक बनाने के लिए" निम्नलिखित कार्य करेंगे। –

1. यात्रा कार्यक्रम से अवगत कराना
2. लचीला समय सारणी
3. जिम्मेदारियाँ बाँटना
4. बेहतर संचार और सहभागिता
5. दर्शकों की ओर समर्पण
6. सुरक्षा और तैयारी
7. भोजन और खपत
8. समय-पालन और लचक

उपर्युक्त चित्र में हम विभिन्न तरह के लोगों को देख रहे हैं- जैसे दृष्टिहीन व्यक्ति, बुर्जुग, बच्चे, महिला, व्हीलचेयर पर व्यक्ति आदि। इनके हिसाब से पहुँचने, घूमने, खाने आदि में हम निम्न तरीकों से सहायता करेंगे।

**1. पहुँचने में सहायता-**

(क) दृष्टिहीन व्यक्तिः
- रास्ते का सुरक्षित मार्ग बताएँगे।
- ट्रेन /बस में सुरक्षित सीट तक मार्गदर्शन करेंगे।

(ख) व्हीलचेयर उपयोगकर्ता:
- रैंप, लिफ्ट और सुविधाजनक प्लेटफार्म पर पहुँचाएँगे।
- वाहन तक व्हीलचेयर को आसानी से लोड अनलोड करने में मदद करेंगे।

(ग) बुजुर्ग और बच्चों के साथ परिवार:
- धीमी चाल चलते हुए साथ रहेंगे।
- बच्चे को संभालकर रखेंगे और बचाव के उपाय अपनाएँगे।

**2. घूमने-फिरने में सुविधा** –

(क) सुलभता पर ध्यान देंगे।

(ख) जरूरतमंद को गाइड अथवा सहायक उपलब्ध कराएँगे।

(ग) दृष्टिहीन के लिए ऑडियो गाइड, व्हीलचेयर उपयोगकर्ता को स्पॉट- फ्री मार्ग ।

(घ) बैठने और ठहरने के लिए आरामदायक स्थान उपलब्ध कराएँगे।

**3. भोजन और चिकित्सा की समुचित व्यवस्था करवाएँगे।**

(ख) अपने किसी मित्र के साथ बिना बोले संवाद कीजिए – संकेतों से। अब सोचिए कि यात्रा में श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक होगा?

**उत्तर:** यात्रा के दौरान श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए निम्नलिखित तैयारियाँ और सुविधाएँ आवश्यक होती हैं-

1. यात्रा से पहले सभी तैयारियों को लिखित रूप में दें।
2. जहाँ जरूरी हों, स्थानीय मदद या साथी के साथ यात्रा करें।
3. अस्पताल, दफ्तर, एयरपोर्ट में अपनी स्थिति बताने के लिए कार्ड रखें।

(ग) यात्रा करते हुए ऐतिहासिक धरोहरों या भवनों की सुरक्षा के लिए आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

**उत्तर:**

1. धरोहरों और उनके आस-पास कूड़ा-कचरा न फैलाएँ।
2. धरोहरों के अंदर फोटोग्राफी न करें।
3. इमारतों की दीवारों या पत्थरों पर अपना नाम न लिखें।
4. मूर्ति, कलाकृति या किसी भी नाजुक हिस्से को न छुएँ।
5. धरोहर के अंदर या आस-पास शोर न मचाएँ।

## आज की पहेली

पाठ में से शब्द खोजिए और नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए-

प्रश्न 1. एक मसाले का नाम .................. **उत्तर:** दालचीनी

प्रश्न 2. कपास से जुड़ा एक शब्द .................. **उत्तर:** गलीचा

प्रश्न 3. जहाँ स्नान होता है। .................. **उत्तर:** हरि की पैड़ी

प्रश्न 4. वृक्ष के किसी अंग का नाम .................. **उत्तर:** जड़

प्रश्न 5. एक नगर या तीर्थ का नाम .................. **उत्तर:** हरिद्वार

प्रश्न 6. व्यापार से जुड़ा स्थान .................. **उत्तर:** ज्वालापुर

प्रश्न 7. एक नदी का नाम .................. **उत्तर:** गंगा

प्रश्न 8. एक पर्वत का नाम .................. **उत्तर:** विल्वपर्वत

प्रश्न 9. एक धार्मिक ग्रंथ का नाम .................. **उत्तर:** श्रीमद् भागवत

**खोजबीन के लिए**

भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक प्रसिद्ध नाटक है – अंधेर नगरी। इसे पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

**उत्तर:**

*विद्यार्थी स्वयं करेंगे।*

**भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाटक – अंधेर नगरी**

**परिचय:**

'अंधेर नगरी' भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक प्रसिद्ध हास्य और व्यंग्यप्रधान नाटक है। इसमें समाज की अव्यवस्था, प्रशासनिक असमानता और भ्रष्टाचार का व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है। नाटक का उद्देश्य लोगों को मनोरंजन के साथ-साथ सोचने पर मजबूर करना है कि व्यवस्था में अगर नियम, न्याय और अनुशासन न हो तो समाज किस तरह अस्त-व्यस्त हो सकता है।

**मुख्य बातें:**

1. नाटक की कहानी एक ऐसे नगर (अंधेर नगरी) पर आधारित है जहाँ कानून और न्याय उल्टा चलता है।
2. राजा और प्रशासनिक अधिकारी अपने स्वार्थ और लालच में लिप्त हैं।
3. यहाँ नियम उल्टे लागू होते हैं – अच्छा कर्म करने पर दंड और बुरा कर्म करने पर पुरस्कार मिलता है।
4. यह नाटक व्यंग्य और हास्य का मिश्रण है, जिससे पाठक/दर्शक आनंदित होते हैं और सोचते भी हैं।

**चर्चा के लिए सुझाव:**

- नाटक में दिखाए गए सामाजिक और प्रशासनिक विसंगतियों पर अपने विचार साझा करें।
- नाटक में हास्य के माध्यम से व्यंग्य को कैसे प्रस्तुत किया गया है, यह समझें।
- आज के समाज में इस नाटक की सटीकता या प्रासंगिकता पर चर्चा करें।